Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

हिन्दी निबंध एवं प्रारूप लेखन

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: MPM06

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

हिन्दी निबंध एवं प्रारूप लेखन

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP विषय सूची (Contents)

1. निबंध लेखन : क्या, क्यों, कैसे? 7–35

1.1 निबंध क्या है? 7

1.2 निबंध लिखने की प्रक्रिया और उससे जुड़ी चुनौतियाँ 11

1.3 निबंध लेखन से जुड़े अन्य सुझाव 31

2. दीर्घ श्रेणी के निबंधों का संग्रह 36–244

2.1 सागरीय प्रदूषण : प्रदूषण का अनछुआ पहलू 36

2.2 क्या सृष्टि का विनाश लगातार बढ़ते प्रदूषण के कारण होगा? 37

2.3 प्रकृति हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए है, लालचों को नहीं–गांधी जी। 40

2.4 पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को विकास का बाधक होने की आवश्यकता नहीं है। 42

2.5 शहरीकरण एवं पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएँ 44

2.6 राष्ट्रीय विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका 45

2.7 "विज्ञान जहाँ विकास का कारक है, वहीं विनाशक की भी भूमिका निभाता है।" क्यों और कैसे? विचार कीजिये। 47

2.8 इंटरनेट पर निजता की सुरक्षा 48

2.9 क्या तकनीक हमारी रचनात्मकता को खत्म कर रही है? 49

2.10 साइबर स्पेस और इंटरनेट : वरदान या अभिशाप 50

2.11 धर्म आधुनिक राज्य का आधार नहीं हो सकता 52

2.12 धर्म : संस्कृति पूरक अथवा विरोधी 53

2.13 धार्मिक अतिवाद की गिरफ्त में आता भारतीय युवा 55

2.14 धर्म और नैतिकता : सहयोगी या विरोधी 58

2.15 सच्चे धर्म का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता 64

2.16 शिक्षा समाज को बदलने का सबसे शक्तिशाली हथियार है। 66

2.17 वर्तमान शिक्षा पद्धति में मूल्यों के ह्रास का प्रश्न। 67

2.18 वास्तविक शिक्षा क्या है? 70

2.19 भारत में शिक्षा प्रणाली की पुनः संरचना। 71

2.20 क्या सर्वसाधारण के शिक्षण द्वारा समतावादी समाज सम्भव है? 75

2.21 उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण का प्रभाव : भारत के संदर्भ में 77

2.22 'वैश्वीकरण' बनाम 'राष्ट्रवाद' 79

2.23 वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव 80

2.24 भूमंडलीकरण और कुटीर उद्योग 81

2.25 आधुनिकीकरण के विविध आयाम 82

2.26 भूमंडलीकरण के दौर में राष्ट्रवाद की अवधारणा 85

2.27 कल्पना शक्ति बुद्धिमत्ता से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। 86

2.28 क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्राकृतिक बुद्धिमत्ता को विस्थापित कर सकती है? 87

2.29 कृत्रिम बुद्धि का उत्थान : भविष्य में बेरोज़गारी का खतरा अथवा पुनर्कौशल और उच्चकौशल के माध्यम से बेहतर रोज़गार के सृजन का अवसर 90

2.30 भारत में खेल संस्कृति का अभाव है, खिलाड़ियों का नहीं। 94

2.31 खेलों का हमारे व्यक्तित्व विकास में योगदान। 96
2.32 खेल हमारे सर्वांगीण विकास के लिए बहुत जरूरी है? 98
2.33 हॉकी खेल का महत्त्व 100
2.34 भाषा और संस्कृति 101
2.35 साहित्य, संस्कृति और राजनीति का त्रिकोण 103
2.36 संस्कृति, साहित्य और समाज के अन्योन्याश्रित संबंधों पर विचार कीजिये 105
2.37 हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत 106
2.38 भारतीय संस्कृति और असहिष्णुता का मुद्दा वर्तमान संदर्भ में 108
2.39 भारत की समेकित संस्कृति। 109
2.40 योग आधुनिक मानव का एक विश्वसनीय साथी है। 113
2.41 योग महज़ हिन्दू व्यायाम पद्धति नहीं बल्कि एक संपूर्ण जीवन शैली है। 115
2.42 वर्तमान में भी तमाम असाध्य रोगों का अस्तित्व क्या मेडिकल साइंस की विफलता है? 117
2.43 भारत में विकलांगता की समस्या एवं समाधान 119
2.44 भारत में स्वास्थ्य व्यवस्था 121
2.45 विश्व व्यवस्था में महामारी के दूरगामी परिणाम। 125
2.46 भारत में ई-कॉमर्स का भविष्य। 126
2.47 ई-मार्केटिंग क्या हैं? 128
2.48 ई-कॉमर्स 129
2.49 प्रगति बनाम विकास 131
2.50 आर्थिक विकास से खुशहाली की ओर : एक प्रतिमान परिवर्तन 133
2.51 विकसित भारत का स्वप्न: वास्तविकता या मिथक 135
2.52 आर्थिक विकास की प्रक्रिया में तीव्र समावेशीकरण की आवश्यकता। 136
2.53 विपरीत परिस्थितियाँ विकास के बेहतर अवसर लाती हैं 139
2.54 क्या हमारी न्याय व्यवस्था सिर्फ सामर्थ्यवान व्यक्तियों के लिए है? 141
2.55 एक राष्ट्र, एक चुनाव: चुनौतियाँ व उपाय 143
2.56 भारत में सुचारु शासन की स्थापना में ई-शासन की भूमिका। 146
2.57 कम शासन सुशासन का पर्याय है। 148
2.58 भारत में ई-गवर्नेंस का भविष्य : संभावना एवं चुनौतियाँ 150
2.59 लोक प्रशासन में पारदर्शिता की आवश्यकता। 151
2.60 लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ। 153
2.61 दलित विमर्श : दशा और दिशा। 156
2.62 क्या जाति आधारित जनगणना 'जातिमुक्त' भारत के सपने में बाधक है? 159
2.63 भारत के समग्र विकास में जनजातियों का स्थान। 161
2.64 क्या देश के जनजातीय क्षेत्रों में सभी नूतन खननों पर अधिस्थगन लागू किया जाना चाहिये? 163
2.65 आदिवासी समाज की प्रकृति से घनिष्ठता उसे शेष विश्व से आगे ले जाती है। 164
2.66 राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से कश्मीर-समस्या पर विचार करें। 166
2.67 भारत की मौलिक-एकता क्या है? उदाहरण सहित विवेचना कीजिये। 167
2.68 भारतीय एकता को ध्यान में रखते हुए "पड़ोसी देशों से मिलने वाली चुनौतियाँ और समाधान" विषय पर विचार कीजिये। 169
2.69 "सामाजिक-एकता की दृष्टि से आर्थिक असमानता असहयोगी-चिंताधारा का निर्वहन करने लगता है।" इस पर विचार कीजिये। 170
2.70 राष्ट्रवाद : एक मिथ्या चेतना या राष्ट्रप्रेम की स्वाभाविक अभिव्यक्ति? 172

2.71 भीड़तंत्र का न्याय : व्यवस्था की असफलता 175
2.72 राजनीति में नारी की भूमिका 176
2.73 आरक्षण, राजनीति एवं सशक्तीकरण 177
2.74 स्वच्छ भारत मिशन 178
2.75 जंगल पर किसका अधिकार? 179
2.76 कौशलयुक्त युवा ही भारत के भविष्य हैं। 180
2.77 साक्षरता : मानव विकास की आधारशिला है 182
2.78 रभ्रष्टाचार विरोधी मुहिम और राजनीतिक संकट 183
2.79 भारत में बाल-श्रम समस्या और समाधान 184
2.80 मानवाधिकार के संरक्षण में भारत की भूमिका 186
2.81 कहीं पर भी गरीबी, हर जगह की समृद्धि के लिये खतरा है 187
2.82 भारतीय ऊर्जा सुरक्षा : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ 188
2.83 सौर ऊर्जा : भविष्य की ऊर्जा के रूप में 190
2.84 वर्तमान भारतीय ऊर्जा परिदृश्य की धारणीयता। 190
2.85 धारणीय आर्थिक विकास के लिये पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण का परिरक्षण अत्यावश्यक है 192
2.86 सतत विकास का लक्ष्य और भारत 194
2.87 ड्रग्स का सेवन : कारण और समाधान 195
2.88 महिलाओं के संवैधानिक विधिक अधिकार: वर्तमान परिदृश्य 198
2.89 महिलाओं के लिये कार्यस्थल पर समानता 200
2.90 क्या शिक्षा और कानून भारत में महिलाओं और बच्चों के खिलाफ हिंसा को कम कर सकते हैं? 201
2.91 महिला सशक्तीकरण और घरेलू हिंसा 203
2.92 कन्या भ्रूण हत्या। 204
2.93 चीन मुद्दे पर क्या हो हमारी नीति? 205
2.94 भारत के सीमावर्ती राज्य : अशांति के कारण और निदान 207
2.95 नक्सलवाद और भारतीय बुद्धिजीवियों के अंत:संबंधों पर प्रकाश डालिये। 209
2.96 पश्चिम एशिया में आतंकवाद- कैसे समाप्त हो? 210
2.97 साइबर अपराध - एक जटिल समस्या 211
2.98 आतंकवाद : एक चुनौती 213
2.99 उपभोक्तावाद की संस्कृति का शिकार आम आदमी 214
2.100 जीएसटी: एक देश एक तंत्र 216
2.101 देश में उच्च आर्थिक संवृद्धि और संसाधनों का असमान वितरण। 219
2.102 पर्यटन : संभावित उद्योग 221
2.103 गांधीवाद और आधुनिक हिंदी साहित्य 221
2.104 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और समाज पर उसका प्रभाव 223
2.105 जलवायु परिवर्तन आम लोगों की त्रासदी है 225
2.106 भारत में भूकंप के संभावित खतरे, कारण और अपेक्षित सावधानियाँ 227
2.107 भारत में स्मार्ट सिटी का स्वप्न : कल्पना या वास्तविकता 228
2.108 राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन 230
2.109 जन धन योजना : गरीबों का सारथी 231
2.110 डॉ. अम्बेडकर : एक युगद्रष्टा एवं क्रांतिकारी समाज सुधारक। 232
2.111 बुद्ध के विचारों की उत्तरजीविता अनंत है। 235
2.112 विवेकानन्द का दर्शन और भारतीय समाज। 239

2.113 गांधी : भारतीय सभ्यता के अग्रदूत। 241
2.114 वर्तमान में गाँधीवाद की प्रासंगिकता 243
3. लघु श्रेणी के निबंधों का संग्रह **245–266**
3.1 कोरोना वायरस के सामाजिक तथा आर्थिक प्रभाव। 245
3.2 भारत में अंगदान : वर्तमान परिदृश्य एवं संभावनाएँ 246
3.3 आयुष्मान भारत : विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सेवा योजना। 248
3.4 पर्यावरण का नाश एक विलंबित आत्महत्या है 250
3.5 स्टिंग ऑपरेशन निजता पर प्रहार है 252
3.6 विमुद्रीकरण की अवधारणा: चुनौतियाँ और समाधान। 253
3.7 'ग्रामोदय' भारत उदय की पहली शर्त है 254
3.8 नारी है तो कल है 256
3.9 मैं सोचता हूँ, इसलिये मैं हूँ। 257
3.10 न्यू इंडिया विज़न 257
3.11 सोशल मीडिया और आंतरिक सुरक्षा 258
3.12 नगरीकरण : एक प्रच्छन्न वरदान है। 259
3.13 कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन् 260
3.14 राष्ट्रभाषा हिन्दी : स्थिति और अपेक्षाएँ 261
3.15 बेरोज़गारी की समस्या 261
3.16 पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं 262
3.17 भारत की सांस्कृतिक एकता 263
3.18 वास्तविक शिक्षा क्या है? 264
3.19 दिव्यांगजनों के सशक्तीकरण में आरक्षण का महत्त्व 264
3.20 प्रदूषण : समस्या और समाधान 265
4. प्रारूप लेखन (पत्र लेखन) **267–292**
4.1 पत्र 267
4.2 शासकीय पत्र 268
4.3 अर्द्ध-शासकीय पत्र 271
4.4 परिपत्र 273
4.5 प्रपत्र 275
4.6 आदेश/कार्यालय आदेश 277
4.7 विज्ञापन 280
4.8 अनुस्मारक/स्मरण-पत्र 281
4.9 पृष्ठांकन 282
4.10 अधिसूचना 284
4.11 टिप्पणी एवं टिप्पण लेखन 286
4.12 प्रतिवेदन 289

अध्याय
1

निबंध लेखन : क्या, क्यों, कैसे?

निबंध लिखना विद्यार्थी जीवन की सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। पढ़ाई चाहे विद्यालय स्तर की हो, कॉलेज स्तर की या प्रतियोगी परीक्षाओं के स्तर की, निबंध लेखन की चुनौती विद्यार्थियों के सामने बनी ही रहती है। कई विद्यार्थियों के मन में यह सहज सवाल उठता है कि आखिर उनसे निबंध क्यों लिखवाया जाता है? निबंध को पढ़कर कोई उनके मानसिक स्तर या व्यक्तित्व का मूल्यांकन कैसे कर सकता है? और अगर कर सकता है, तो उन्हें एक बेहतरीन निबंध कैसे लिखना चाहिये?

इस लेख के माध्यम से हम ऐसे ही कुछ प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश करेंगे। विश्वास रखिये कि निबंध लेखन की कला कोई जन्मजात कला नहीं है, इसे कठोर अभ्यास से निश्चित तौर पर साधा जा सकता है। अगर आप भी ठान लेंगे कि आपको प्रभावशाली निबंध लेखक बनना है तो एक-दो महीनों के निरंतर और रणनीतिक अभ्यास से आप निश्चय ही इस सपने को साकार कर लेंगे।

1.1 निबंध क्या है?

सबसे पहले हम यही समझने की कोशिश करते हैं कि एक विधा के रूप में निबंध क्या है और यह अन्य विधाओं से कैसे अलग है? 'विधा' शब्द शायद आपको नया लग रहा होगा। इसका अर्थ साहित्य, संगीत या कला की विशेष शैलियों से होता है। उदाहरण के लिये, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, लेख और समीक्षा विभिन्न विधाओं के उदाहरण हैं। किसी विधा में उतरने से पहले बेहतर होता है कि उसके चरित्र को ठीक से समझ लिया जाए। मुझे विश्वास है कि अगर आपको निबंध विधा की ठीक समझ होगी तो निबंध लेखन की प्रक्रिया में आप अपना सतत् मूल्यांकन भी कर सकेंगे और प्रभावशाली निबंध भी लिख सकेंगे।

कुछ लोग मानते हैं कि निबंध एक प्राचीन भारतीय विधा है जिसका मूल संस्कृत साहित्य में खोजा जा सकता है। यह बात सही है कि संस्कृत में 'निबंध' नाम की एक विधा मौजूद थी जिसमें धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की विवेचना की जाती थी। इस विधा में लेखक पहले अपने से विरोधी सिद्धांतों को चुनौती के तौर पर पेश करता था और फिर एक-एक करके अपने तर्कों, प्रमाणों की मदद से उन सभी सिद्धांतों को ध्वस्त करता था। चूँकि इस विधा में प्रमाणों का 'निबंधन' किया जाता था, इसीलिये इसका नाम 'निबंध' पड़ गया था।

सवाल यह है कि आज हम जिसे निबंध कहते हैं, वह यही विधा है या उससे अलग? इसका सामान्यत: प्रचलित उत्तर है कि आज का निबंध अपने चरित्र और स्वरूप में संस्कृत के 'निबंध' पर नहीं बल्कि अंग्रेज़ी के 'Essay' पर आधारित है। अत: निबंध विधा को समझने के लिये हमें आधुनिक यूरोपीय साहित्य की पृष्ठभूमि का अनुसंधान करना चाहिये।

माना जाता है कि एक आधुनिक विधा के रूप में 'निबंध' की शुरुआत 1580 ई. में फ्राँस के लेखक मॉन्तेन (Montaigne) के हाथों हुई। मॉन्तेन ने अपने निबंधों के लिये 'एसे' (Essay) शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ होता है- 'प्रयोग'। उस समय फ्राँस में कहानी, नाटक, कविता जैसी कई विधाएँ प्रचलित थीं पर निबंध का कलेवर उन सबसे अलग था। इसमें कहानियों की तरह न तो विभिन्न चरित्र/पात्र थे और न ही घटनाएँ। नाटक में कहानी के साथ-साथ दृश्य और मंच की भी बड़ी भूमिका होती है, पर निबंध में यह सब भी नहीं था। अगर कविताओं से तुलना करें तो उनमें छंद, तुक और लय जैसे ढाँचे उपस्थित होते हैं जो रचनाकार को एक बुनियादी फ्रेमवर्क उपलब्ध करा देते हैं; पर निबंध में ये भी नहीं थे क्योंकि निबंध पद्य (Poetry) में नहीं, गद्य (Prose) में था।

स्पष्ट है कि निबंध इन सभी विधाओं से अलग था। एक अर्थ में यह सबसे कठिन विधा के रूप में उभरा क्योंकि इसमें पाठक को बांधकर रखना सबसे मुश्किल काम था। यह मुश्किल इसलिये था क्योंकि इसमें मनोरंजन पैदा करने के लिये न घटनाएँ थीं और न ही कहानियाँ। इसमें सिर्फ 'विचार' या 'भाव' थे जो बिना किसी ओट या माध्यम के सीधे ही व्यक्त होने थे। अगर निबंध लेखक के पास सूक्ष्म विचार-क्षमता और सीधे दिल तक पहुँचने वाली भाषा हो तो ही वह अपने

अध्याय
2

दीर्घ श्रेणी के निबंधों का संग्रह

पर्यावरण

नोट: दीर्घ श्रेणी में 1000-1200 शब्दों के निबंधों को शामिल किया जाता है।

2.1 सागरीय प्रदूषण : प्रदूषण का अनछुआ पहलू

अपनी श्रेष्ठता के तमाम दावों के बावजूद मनुष्य मूलत: स्वार्थी प्राणी है। उसकी स्वार्थजनित प्रवृत्ति ही है कि वह प्रदूषण की तमाम समस्याओं पर विचार करते समय पृथ्वी के दो-तिहाई हिस्से की तुलना में अपने मतलब के एक-तिहाई हिस्से की ज़्यादा चिंता करता है। उसे स्थल से मतलब है क्योंकि वह स्थल पर रहता है। उसे वायु की चिंता है क्योंकि वह वायु से ऑक्सीजन लेता है। बाकी दुनिया का 71% हिस्सा जो कि समुद्र है, आज उसका सबसे बड़ा कूड़ाघर बन चुका है। समुद्रों की हालत आज हमारे पड़ोस की उस खाली पड़ी ज़मीन की तरह हो गई है जिसका कोई दावेदार नहीं है और सारा मुहल्ला जिसमें अपना कूड़ा-कचरा बेरोकटोक फेंकता है।

लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि अपनी विशालता और गहराई के चलते महासागर अनंतकाल तक मनुष्यों द्वारा फेंके जाने वाले कचरे को समेटने में सक्षम रहेंगे तथा इसके प्रभावों से अछूते रहेंगे। पर अब हालात ये हैं कि सागरीय प्रदूषण के अनेक सीधे प्रभाव मानव आबादी पर भी पड़ रहे हैं। महासागरों का पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानव सभ्यता का बड़ा हिस्सा हज़ारों सालों से महासागरों पर किसी-न-किसी रूप में आश्रित है। हमारी यह निर्भरता संसाधनों के दोहन तक ही सीमित नहीं है। हालत यह है कि आज परमाणु परीक्षण से लेकर परमाणु कचरे के निपटान तक सब कुछ महासागरों में ही किया जा रहा है।

नदियाँ समुद्र से मिलने के साथ ही अपने साथ बहाकर लाई गई प्रत्येक वस्तु समुद्र में ही समाहित कर देती हैं। इसके अतिरिक्त तेल का रिसाव, समुद्री मलबा, जहाज़ों द्वारा फैलाया जाने वाला कचरा, समुद्र तल में खनन, अम्लीकरण, सुपोषण और ध्वनि प्रदूषण सामुद्रिक प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। ज़्यादातर प्रदूषण मिट्टी से होता है जो नदियों के साथ सीधे समुद्र में प्रवेश करती है। यह अपवाह अपने साथ कार्बन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और खनिजों के कणों को अपने साथ ले जाता है। इन पोषक तत्त्वों से युक्त पानी से शैवाल और पादप प्लवक की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। इन्हें एल्गल ब्लूम्स भी कहा जाता है। एल्गल ब्लूम्स पानी में मौजूद ऑक्सीजन का अवशोषण कर लेते हैं, जो जलीय जीवों के अस्तित्व के लिये खतरनाक होता है।

दुनिया भर में खनिज तेल का अधिकांश परिवहन समुद्री मार्ग से होता है। तेल परिवहन के दौरान टैंकरों से तेल का रिसाव होता है। इसके साथ ही समुद्र से होने वाले पेट्रोलियम तेल के उत्खनन के दौरान भी तेल की बड़ी मात्रा जल में मिल जाती है। जल में मिलने के बाद जल की सतह पर इसकी पतली परत बन जाती है। इससे वातावरण की वायु जल सतह के सीधे संपर्क में नहीं आ पाती है और जल की ऑक्सीजन सांद्रता कम हो जाती है। इसके अतिरिक्त तेल पक्षियों के पंखों की संरचना में प्रवेश कर उनकी रोधक क्षमता कम कर देता है। ऐसे में पक्षी तापमान परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं तथा पानी में उनकी उत्प्लावकता भी कम हो जाती है। जब पक्षी अपनी चोंच से अपने परों को खुजाते हैं तो परों पर लगा हुआ तेल निगल जाते हैं। इसके कारण उनके गुर्दे खराब हो जाते हैं। अन्य समुद्री जीव तेल रिसाव से इसी तरह प्रभावित होते हैं। तेल के पानी के ऊपर तैरने से सूर्य का प्रकाश पानी के अंदर नहीं जा पाता जिससे जलीय पौधों का प्रकाश संश्लेषण सीमित हो जाता है। यह घटना पूरे पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित करती है।

समुद्र में पाए जाने वाले अनेक जीव आपसी संवाद के लिये अलग-अलग आवृत्ति की आवाज़ें निकालते हैं। कभी-कभी इन आवाज़ों का उद्देश्य रास्ता ढूंढना या भोजन की तलाश भी होता है। जहाज़ों की बढ़ती संख्या, तेल निकालना, सोनार का

जी ने अपने आर्थिक आदर्शों में पूंजीवाद व समाजवाद का अद्वितीय समन्वय किया। न तो वे पूंजी के केंद्रीकरण के पक्षधर थे और न ही वे अमीरों की पूंजी गरीबों में बाँट देने की बात करते थे। उनके विचार में धन व उत्पादन के साधनों पर सामूहिक नियंत्रण की स्थापना हेतु एक न्यास जैसी व्यवस्था स्थापित करने पर बल दिया जाना चाहिये। उनके अनुसार न तो पूंजीवाद को नष्ट करना संभव था व न ही मार्क्स के सुझाए साम्यवाद की स्थापना। अत: एक मध्यमार्ग ही उचित विकल्प होगा।

गांधी जी शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन व जीविका कमाने का कार्य एक साथ करने पर बल देते थे। आज जब बेरोज़गारी देश की इतनी बड़ी समस्या है तब गांधी जी के इस विचार को ध्यान में रखकर शिक्षा नीतियाँ बनाना लाभप्रद होगा। गांधी जी का राष्ट्र का विचार भी अत्यंत प्रगतिशील था। उनका राष्ट्रवाद 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचार से प्रेरित था। वे राष्ट्रवाद की अंतिम परिणति केवल एक राष्ट्र के हितों तक सीमित न मानते हुए उसे विश्व कल्याण की दिशा में विस्तृत करने पर बल देते थे। आजकल राष्ट्रवाद का अतिवादी होता स्वरूप को देखते हुए गांधीवादी राष्ट्रवाद सटीक लगता है।

गांधीवाद की प्रासंगिकता को समझते हुए हमारे देश के संविधान में भी उनके कई विचारों को स्थान दिया गया व उन विचारों का आज भी प्रासंगिक होना यह सिद्ध करता है कि गांधी के विचार कभी भी पुराने नहीं पड़ सकते। विश्व की समस्याओं का समाधान खोजने की राह गांधीवाद में समुचित नवाचार कर उसे प्रयोग करने से काफ़ी आसान हो सकेगी।

विगत वर्षों में मध्य प्रदेश (राज्य सेवा) परीक्षा में पूछे गए निबंध (लगभग 1000 शब्दों में)

1. गांधीवाद और आधुनिक हिन्दी साहित्य **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और समाज पर उसका प्रभाव **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
3. भाषा और संस्कृति **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
4. आधुनिकीकरण के विविध आयाम **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
5. उच्च शिक्षा में बाज़ार मूल्य और जीवन मूल्य का द्वंद्व **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
6. राष्ट्रवाद और वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
7. गांधीवादी दृष्टिकोण और प्रगतिशील राजनीतिक चेतना **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
8. मानव मूल्य और साहित्य **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
9. विज्ञान मनुष्य को सभ्यता की सीढ़ी पर चढ़ाता है और साहित्य इसे मानवता के उच्च शिखर पर। **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
10. सामाजिक समस्याएँ और सिनेमा **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
11. आर्थिक उदारवाद और सामाजिक विषमता **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
12. वर्तमान में नैतिक शिक्षा का अभाव **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
13. लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
14. भारत में प्राकृतिक आपदाएँ : कारण और निवारण **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
15. हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
16. परहित सरिस धर्म नहिं भाई **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**

अध्याय
3

लघु श्रेणी के निबंधों का संग्रह

नोटः लघु श्रेणी में 250-500 शब्दों के निबंधों को शामिल किया जाता है।

3.1 कोरोना वायरस के सामाजिक तथा आर्थिक प्रभाव

"परिवर्तन विज्ञान सम्मत है, परिवर्तन को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है, जबकि प्रगति राय और विवाद का विषय है"

उपर्युक्त कथन आर्थिक व सामाजिक प्रगति के इस युग में उत्पन्न हुए विभिन्न विवाद को ही चरितार्थ करता है, जिनमें से वर्तमान समय में कोरोना से उत्पन्न महामारी को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है जिससे विश्व अर्थव्यवस्था व समाज को अनेक परिवर्तन का सामना करना पड़ रहा है।

कोरोना वायरस के आर्थिक प्रभाव पर प्रकाश डालें तो यह प्रतीत होता है कि इस वायरस की वजह से समस्त विश्व की अर्थव्यवस्था मंदी के साथ-साथ अनुत्पादक होती जा रही है, जिससे इस वायरस से अमेरिकी अर्थव्यवस्था सहित चीन व भारतीय अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हो रही है, इस वायरस से हवाई यात्रा, शेयर बाज़ार, वैश्विक आपूर्ति शृंखला सहित लगभग सभी क्षेत्र प्रभावित हो रहे हैं, जिससे संपूर्ण वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुस्ती है जो आगे जाकर मंदी का कारण बन सकता है।

निवेशकों को बाज़ार से बाहर निकलने के कारण शेयर बाज़ार सूचकांक में लगातार गिरावट हो रही है, अमेरिकी बाज़ार में जहाँ 12% की गिरावट दर्ज की गई, वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था में गिरावट का क्रम अब भी जारी है। कोरोना वायरस से चीनी अर्थव्यवस्था के प्रभावित होने के कारण भारतीय आयात व निर्यात पर व्यापक असर पड़ा है। क्योंकि भारत अपने कुल आयातित माल का 18%, इलेक्ट्रॉनिक घटक का 67% एवं उपभोक्ता व टिकाऊ वस्तु का 45% चीन से आयात करता है, यह महामारी न केवल आपूर्ति शृखंला को ही प्रभावित कर रही है, बल्कि भारत व विश्व के फार्मास्यूटिकल इलेक्ट्रॉनिक, ऑटोमोबाइल जैसे- उद्योगों को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रही है।

हालाँकि माना जा रहा है कि इससे कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से उच्च मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न होगी जिससे आगामी समय में मांग में वृद्धि से उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना है।

वायरस जनित संकट किसी अन्य वित्तीय संकट से बिल्कुल अलग है, अन्य संकटों का समाधान आर्थिक विधियों व तकनीकों से हो सकता है, परंतु वायरस जनित संकट का समाधान इन वित्तीय उपायों से संभव नहीं है, हालाँकि सरकार लगातार विकास की गति का अवलोकन कर आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है।

कोरोना वायरस से उत्पन्न आर्थिक प्रभाव के साथ-साथ इसके सामाजिक प्रभाव पर विचार व विश्लेषण करें तो शायद उस पर पूरी किताब लिखी जा सकती है, परंतु महामारी से उत्पन्न सामाजिक प्रभाव के मुख्य आयामों का अवलोकन करें तो महामारी से उत्पन्न प्रथम व सबसे गंभीर प्रभाव उन परिवारों पर पड़ेगा जिनके सदस्य इस महामारी की वजह से मृत हो गए हैं।

वे अगर परिवार के मुखिया थे तो ऐसे परिवार को सँभालने की ज़िम्मेदारी, बच्चों के वर्तमान व भविष्य का अनिश्चित हो जाना जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा मृतकों की संख्या हज़ारों में है जिससे समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है।

महामारी का एक सामाजिक प्रभाव "नस्लभेदी" प्रभाव का भी उत्पन्न होना भी है, इस बीमारी का प्रादुर्भाव चीन से होने के कारण चीनी नागरिकों को आगामी कुछ वर्षों तक इस महामारी की वजह से जाना-पहचाना जा सकता है तथा अन्य देशों के लोगों द्वारा ना केवल नस्लभेदी टिप्पणी की जा सकती है, बल्कि उन्हें उपेक्षा का शिकार भी होना पड़ सकता है। भारत में तो नार्थ ईस्ट के भारतीयों पर पहले से ही चीनी, नेपाली चिंकी-पिंकी, मोमोज जैसी नस्ल भेदी टिप्पणियाँ होती रही है। अब इस क्रम में कोरोना का नाम जुड़ना तय है, जिसे एक सामाजिक समस्या के रूप में देखा जाना चाहिये।

अध्याय
4

प्रारूप लेखन (पत्र लेखन)

प्रारूप लेखन (पत्र लेखन) के अंतर्गत इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि मध्य प्रदेश राज्य सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम में किस-किस प्रकार के पत्र एवं प्रारूपों को निश्चित किया गया है तथा विगत वर्षों में आयोजित राज्य सिविल सेवा परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति किस प्रकार की थी। इस अध्याय में पत्र/अनौपचारिक पत्र, शासकीय पत्र, अर्द्धशासकीय पत्र, परिपत्र, प्रपत्र, आदेश (कार्यालय आदेश), विज्ञापन, अनुस्मारक (स्मरण-पत्र), पृष्ठांकन, अधिसूचना एवं टिप्पण तथा टिप्पणी एवं प्रतिवेदन लेखन संबंधी महत्त्वपूर्ण प्रावधानों को स्पष्ट करते हुए प्रत्येक का प्रारूप/नमूना/उदाहरण आदि प्रस्तुत किया गया है जिससे इस खंड से आने वाले सारे प्रश्नों एवं समस्याओं का हल एक जगह हो सके।

4.1 पत्र *(Letter)*

हिन्दी में प्रारूप को रूपरेखा, कच्चा मसौदा या आलेख के रूप में जाना जाता है। इसे अंग्रेजी भाषा में 'ड्राफ्ट' कहते हैं। जब किसी विभाग या कार्यालय में किसी आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, प्रतिवेदन, प्रपत्र, शासकीय एवं अर्द्ध-शासकीय आदि पत्र भेजने से पूर्व जो रूपरेखा या ढाँचा तैयार किया जाता है, उसे प्रारूप कहते हैं।

प्रारूप लेखन प्रक्रिया में सर्वप्रथम लिपिक द्वारा किसी पत्र का कच्चा मसौदा तैयार करके स्वीकृति के लिये अधिकारी के पास भेजा जाता है, अधिकारी उसमें आवश्यक संशोधन करके लिपिक के पास भेज देता है। इस तरह से प्रारूप लेखन की प्रक्रिया को पूरा किया जाता है। प्रारूप लेखन में औपचारिकता, तथ्यपरखता, संक्षिप्तता, उद्धरण, पूर्णता, भाषा शैली आदि बातों का ध्यान रखा जाता है।

पत्र की विशेषताएँ

एक अच्छे पत्र की विशेषताएँ निम्नलिखित होती हैं-

- किसी भी पत्र की भाषा-शैली सरल व सहज होनी चाहिये।
- पत्र में विचारों की सुस्पष्टता होनी चाहिये।
- पत्र में संक्षिप्तता एवं संपूर्णता होनी चाहिये।
- पत्र क्रमिक एवं प्रभावशाली होना चाहिये।
- पत्र में व्याकरण की गलती नहीं होनी चाहिये।
- पत्र में शिष्टाचार का ध्यान अवश्य देना चाहिये।

पत्र के प्रकार

पत्र मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं-

- **अनौपचारिक पत्र**- ऐसा पत्र, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को अपना निजी (स्वयं का) परिचय देता है, उसे अनौपचारिक पत्र कहते हैं। इसमें पत्र भेजने वाले और पाने वाले के बीच घनिष्ठ (व्यक्तिगत) संबंध होता है। यह पत्र माता-पिता, भाई-बहन, मित्र या रिश्तेदारों को लिखा जाता है।
- **औपचारिक पत्र**- ऐसा पत्र, जो केवल सूचनाओं, तथ्यों, जानकारियों आदि के आदान-प्रदान के लिये संप्रेषित किया जाता है तथा जिसमें व्यक्तिगत परिचय का अभाव होता है, उसे औपचारिक पत्र कहते हैं। इसमें व्यक्तिगत रूप से जानने के बाद भी व्यक्तिगत संबंधों का उल्लेख नहीं किया जाता है। जैसे- शासकीय पत्र, अर्द्ध-शासकीय पत्र, परिपत्र, कार्यालय आदेश, अधिसूचना इत्यादि।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596